हरसोलाव का युद्ध' (1681 ई.) और ठाकुर रतन सिंह कुंपावत के कबंध युद्ध का ऐतिहासिक एवं वैज्ञानिक विश्लेषण

- **विषय:** मारवाड़ इतिहास, राजपूत-मुग़ल संघर्ष, कबंध युद्ध (झुंझार) का विश्लेषण
- **लेखक / शोधकर्ता:** गोविंद मालवीया (Real Hi-story)
- **तिथि / संस्करण:** 1st August 2026
- **अभिलेखागार वर्गीकरण (Category):** Indian History, Academic Research, Military History of Rajasthan

मारवाड़ के 30-वर्षीय युद्ध (1679–1707 ई.) के दौरान मार्च 1681 में लड़ा गया '**हरसोलाव का युद्ध**' राजपूती शौर्य, अदम्य साहस और मुग़ल सेना में उपजे खौफ का जीवंत प्रमाण है। महाराजा जसवंत सिंह के निधन के बाद औरंगज़ेब द्वारा मारवाड़ को हड़पने के प्रयासों का वीर दुर्गादास राठौड़ और मारवाड़ के विभिन्न सामंतों ने कड़ा प्रतिरोध किया।

इस ऐतिहासिक युद्ध में आसोप के ठाकुर रतन सिंह कुंपावत (रतना कुंपावत) और उनके साथ मात्र 300-400 राठौड़ योद्धाओं ने औरंगज़ेब के मुख्य मुग़ल सेनापति खान-ए-जहाँ (बहादुर ख़ान) की विशाल फ़ौज और तोपखाने का सामना किया था। **Govind Malviya (REAL HI STORY)**

युद्ध का घटनाक्रम और खौफनाक साका

मार्च 1681 में मुग़ल सेनापति बहादुर ख़ान एक विशाल तोपखाने और हज़ारों मुग़ल घुड़सवारों के साथ जोधपुर के पूर्व में स्थित हरसोलाव (मेड़ता-जोधपुर सीमा) के मैदान में आ धमका।

जब मुग़ल तोपखाने ने आग उगलना शुरू किया, तो रतना कुंपावत ने रक्षात्मक युद्ध खेलने के बजाय सीधा मुग़ल सेनापति के मुख्य दस्ते (Center Vanguard) पर आत्मघाती हमला (**साका**) कर दिया। 400 राठौड़ों का यह हमला इतना प्रचंड था कि मुग़ल तोपचियों को तोपें घुमाने तक का मौका नहीं मिला। हरसोलाव का मैदान लाशों से पट गया और मुग़ल सेनापति बहादुर ख़ान अपनी जान बचाने के लिए हाथी के हौदे में नीचे छिपने पर मजबूर हो गया। **Govind Malviya (REAL HI STORY)**

'कबंध युद्ध' (Headless Combat) एवं जनमानसिकता

भीषण मारकाट के बीच एक तोप का गोला या मुग़ल तलवार का भारी वार ठाकुर रतन सिंह की गर्दन पर लगा। समकालीन डिंगल साहित्य और ख्यातों के अनुसार, उनका सिर धड़ से अलग होकर ज़मीन पर गिर पड़ा, लेकिन उनका शरीर घोड़े पर सवार रहा। एक हाथ में लगाम और दूसरे हाथ में चमकती सिरोही की तलवार लिए उनका धड़ मुग़लों को काटता रहा।

मुग़ल सिपाहियों में यह देखकर ऐसा खौफ फैला कि वे चिल्लाते हुए मैदान छोड़कर भागने लगे– *"यह इंसान नहीं, कोई जिन्न/देवता युद्ध कर रहा है!"* **Govind Malviya (REAL HI STORY)**

वैज्ञानिक, अकादमिक और तार्किक विश्लेषण

क्या कोई इंसान सच में सिर कटने के बाद लड़ सकता है या सिर हाथ में उठा सकता है? अकादमिक इतिहासकार और आधुनिक विज्ञान इसे तीन दृष्टिकोणों से डिकोड करते हैं:

1. **'हथेली पर सिर रखना' एक मुहावरा है:** हिंदी और राजस्थानी साहित्य में *"सिर हथेली पर रखकर लड़ना"* एक प्रसिद्ध मुहावरा है, जिसका अर्थ होता है–**'प्राणों का मोह त्यागकर आत्मघाती युद्ध लड़ना'**। समय के साथ लोककथाओं और जनमानस ने इस मुहावरे को शाब्दिक रूप (Literal Meaning) दे दिया।
2. **'बैटल ट्रान्स' (Battle Trance / Extreme Adrenaline Rush):** चिकित्सा विज्ञान के अनुसार, युद्ध के चरम उन्माद में जब शरीर में एड्रेनालाईन का स्तर अत्यधिक बढ़ जाता है, तो चेहरे या गर्दन पर अत्यंत भयंकर और प्राणघातक घाव लगने के बाद भी स्नायु तंत्र (Nervous System) कुछ क्षणों तक अनैच्छिक रूप से प्रहार करता रहता है।
3. **डिंगल साहित्य का 'अलंकार':** चारण और भाट कवियों ने रतना कुंपावत के चेहरे/गर्दन के क्षत-विक्षत होने और उनके अंतिम साँस तक लड़ने के इस खौफनाक रूप को अमर करने के लिए 'कबंध' (धड़ का लड़ना) या 'झुंझार होना' के रूपक/अलंकार का प्रयोग किया। **Govind Malviya (REAL HI STORY)**

प्राथमिक एवं अकादमिक साक्ष्य

यह घटना केवल सुनी-सुनाई कहानियों तक सीमित नहीं है, इसके ठोस अकादमिक संदर्भ उपलब्ध हैं: **Govind Malviya (REAL HI STORY)**

- **मासिर-ए-आलमगीरी (फ़ारसी मुग़ल रिकॉर्ड):**
  - **लेखक:** साकी मुस्तैद ख़ान (अनूदित: सर जादुनाथ सरकार)
  - **संदर्भ:** पृष्ठ 122–124
  - **साक्ष्य:** मुग़ल रिकॉर्ड्स स्वीकार करते हैं कि खान-ए-जहाँ बहादुर को मारवाड़ में राजपूतों के ऐसे भयंकर और आत्मघाती प्रतिरोध का सामना करना पड़ा कि मुग़ल सेना को भारी नुकसान उठाना पड़ा और उन्हें पीछे हटना पड़ा।
- **जोधपुर राज्य का इतिहास (भाग 2):**
  - **लेखक:** डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा
  - **संदर्भ:** पृष्ठ 498–502
  - **साक्ष्य:** डॉ. ओझा ने इस युद्ध में रतना कुंपावत के अदम्य साहस और मुग़ल तोपखाने के विरुद्ध उनके ऐतिहासिक साके का अकादमिक विवरण दर्ज किया है।
- **मारवाड़ री ख्यात (भाग 2):**
  - **संपादक:** बदरीप्रसाद साकरिया
  - **संदर्भ:** पृष्ठ 72–76
  - **साक्ष्य:** कुंपावत राठौड़ों की वंशावली और इस युद्ध में रतना कुंपावत के 'झुंझार' होने का लिखित राजस्थानी साक्ष्य।
- **समकालीन डिंगल काव्य (अजीत विलास एवं गुण भाषा):**

  "सिर कटियो धड़ लढ़ियो, हरसोलाव री धार।"

निष्कर्ष

ठाकुर रतन सिंह कुंपावत का 'कबंध युद्ध' केवल एक चमत्कार या काव्य-अतिशयोक्ति नहीं है, बल्कि इस बात का अकाट्य ऐतिहासिक प्रमाण है कि जब बात मातृभूमि की रक्षा की हो, तो एक सच्चा योद्धा अपनी जैविक सीमाओं को पार कर दुश्मन के दिल में वो खौफ पैदा कर देता है जो सदियों तक इतिहास के पन्नों में गूँजता रहता है।

© 1st August 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY)